

डॉ. डेविड डिसिल्वा , न्यू टेस्टामेंट की सांस्कृतिक दुनिया , सत्र 1, परिचय: सम्मान और शर्म

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा हैं जो न्यू टेस्टामेंट की सांस्कृतिक दुनिया पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 1 है, परिचय: सम्मान और शर्म।

नमस्ते, मेरा नाम डेविड डिसिल्वा है। मैं ओहियो के एशलैंड में एशलैंड थियोलॉजिकल सेमिनरी में न्यू टेस्टामेंट और ग्रीक का प्रोफेसर हूँ, जहाँ मैंने 1995 से पढ़ाया है। मुझे फ्लोरिडा कॉन्फ्रेंस में यूनाइटेड मेथोडिस्ट एल्डर नियुक्त किया गया है और मैं शिक्षा जगत में अपने काम को मुख्य रूप से चर्च की सेवा के रूप में मानता हूँ। मैं अपने डॉक्टरेट शोध प्रबंध पर शोध करते समय बहुत पहले न्यू टेस्टामेंट के सांस्कृतिक वातावरण में रुचि रखने लगा था, जो वास्तव में किसी विशेष न्यू टेस्टामेंट पाठ को पढ़ने के मामले में काफी अंतर पैदा करता था।

मेरे मामले में, यह इब्रानियों को लिखा गया पत्र था। किसी भी तरह के ग्रंथों को पढ़ते समय हमारे लिए संस्कृति के बारे में एक प्रमुख संदर्भ या वातावरण के रूप में सावधानीपूर्वक और आलोचनात्मक रूप से सोचना महत्वपूर्ण है। हमारे लिए धर्मग्रंथों को पढ़ना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक प्रथाएँ जिनसे हम परिचित होते हैं और जो 21वीं सदी में, विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में पले-बढ़े होने के कारण हमारे सोचने के तरीके का अभिन्न अंग बन जाती हैं, वे उन सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं और काम करने के तरीकों से बहुत अलग हैं जो पहली शताब्दी ईस्वी के पूर्वी भूमध्य सागर में रहने वाले लोगों द्वारा अनुभव किए गए थे। उदाहरण के लिए, हम शायद ही कभी सम्मान और शर्म के बारे में सोचते हैं।

कम से कम, मैं शायद ही कभी 21वीं सदी के फ्लोरिडा में इन चीजों के बारे में सोचता हूँ जैसा कि मैं सोचता हूँ। मैं बहुत ज़्यादा सोचता हूँ, या मैं लोगों को व्यक्तिगत अधिकारों, वैधता, क्या कार्रवाई योग्य है या नहीं के सवालों के संदर्भ में बहुत ज़्यादा सोचते हुए देखता हूँ, समूह के मूल्यों को क्या दर्शाता है और क्या वे मूल्य हमारे व्यवहार में परिलक्षित होंगे या नहीं, इसके विपरीत। इसलिए, हमारे साथियों की प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या यह हमें महत्व देने या हमें सम्मान देने के लिए होगी, या इसका परिणाम प्रतिष्ठा की हानि या मूल्य की हानि होगी? व्यापार करने के हमारे तरीके, वस्तुओं तक पहुँच प्राप्त करने के तरीके, मुख्य रूप से व्यावसायिक हैं, न कि संबंधपरक।

जब मुझे लगभग किसी भी चीज़ की ज़रूरत होती है, तो मैं उसे कुछ देकर और वहीं पर किसी और चीज़ के बदले में, आम तौर पर नकद या क्रेडिट देकर प्राप्त कर लेता हूँ। यह वस्तुओं या अवसरों तक पहुँचने का एक संबंधपरक दृष्टिकोण नहीं है, जबकि पहली सदी के भूमध्यसागरीय

लोग बहुत हद तक बाद वाले दृष्टिकोण पर आधारित थे। मैं परिवार के बारे में एशिया माइनर, यहूदिया या मिस्र के पहली सदी के निवासी के परिवार के बारे में सोचने के तरीके से बहुत अलग तरीके से सोचता हूँ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में परिवार के बारे में हमारी धारणाएँ तुलनात्मक रूप से काफी सीमित हैं। हमारे पास परमाणु परिवार हैं, और अगर हम एक विस्तारित परिवार के बारे में बात करते हैं, तो यह अभी भी प्राचीन लोगों द्वारा परिवारों की अवधारणा की तुलना में काफी छोटा है। और, बेशक, पवित्रता और प्रदूषण जैसे मूल्यों का हमारे लिए 21वीं सदी के पश्चिमी दुनिया में बहुत अलग महत्व है, जबकि पहली सदी में गलील या यहूदिया में घूमते हुए यीशु के लिए उनका महत्व नहीं था।

हमारे लिए, प्रदूषण मुख्य रूप से एक पर्यावरणीय मुद्दा है, या अगर हम अपवित्रता या सफाई के संदर्भ में सोचते हैं, तो इसे अक्सर धर्म के दायरे और ईश्वर से संबंधित और ईश्वर की उपस्थिति के सामने आने की क्षमता के विपरीत स्वच्छता या रोगाणुओं के दायरे में स्थानांतरित कर दिया जाता है। सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक प्रथाएँ 20 शताब्दियों में और महाद्वीपों में स्थानांतरित होने के साथ बहुत बदल गई हैं, लेकिन सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक प्रथाओं का अपना तर्क है। उनकी अपनी पूर्वधारणाएँ हैं, और हमें प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या करने में बहुत सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि हम उन ग्रंथों पर अपने सांस्कृतिक तर्क या अपनी सांस्कृतिक पूर्वधारणाएँ न थोपें।

वे ग्रंथ हमारे लिए बहुत ही विदेशी संस्कृति से लिखे गए हैं, जिनमें विदेशी सांस्कृतिक तर्क और विदेशी सामाजिक पूर्वधारणाएँ हैं। यदि हमें उस अंतर के बारे में जागरूकता और ज्ञान प्राप्त नहीं होता है, तो हम अनिवार्य रूप से उन ग्रंथों को गलत तरीके से पढ़ेंगे। मुझे यह एक बड़ा खतरा लगता है जब उन ग्रंथों में पवित्र शास्त्र का अधिकार होता है क्योंकि हम जो जोखिम उठाते हैं वह यह है कि हम अपनी संस्कृति की पूर्वधारणाओं को पाठ में पढ़ते हैं और उन्हें पाठ से सुनते हैं, जो अब दिव्य अधिकार से संपन्न है, जबकि कई मामलों में वे ग्रंथ हमारी सांस्कृतिक पूर्वधारणाओं को चुनौती देते हैं और हमें, कुछ मायनों में, उस संबंध में काफी विपरीत-सांस्कृतिक रूप से जीना शुरू करने के लिए कहते हैं।

एक उदाहरण जो ईसाई धर्मशास्त्र और शिष्यत्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, मुझे लगता है, वह है अनुग्रह के मुफ्त उपहार की अवधारणा। हमारा सांस्कृतिक स्थान हमें इस वाक्यांश को इस अर्थ में पढ़ने के लिए प्रेरित करता है कि इस तरह के अनुग्रह के प्राप्तकर्ता पर कोई दायित्व नहीं है। हम अनुग्रह के मुफ्त उपहार को सुनते हैं, और हम इसका अर्थ यह निकालते हैं कि यह मुफ्त होना चाहिए क्योंकि इसमें हमें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता।

पौलुस ने कभी भी उन शब्दों में नहीं सोचा होगा जब उसने परमेश्वर के अनुग्रह के मुफ्त उपहार के बारे में लिखा था, लेकिन हम मानते हैं कि यह उसका मतलब है, और इसलिए, हम परमेश्वर के अनुग्रह के उपहार और हमारे शिष्यत्व, परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया की समझ के बीच एक बड़ी खाई से पीड़ित हैं। हम पौलुस की बात नहीं सुनते जब वह कहता है कि यीशु सभी के लिए मरा ताकि जो लोग जीवित हैं वे अपने लिए नहीं बल्कि उसके लिए जिएँ जो उनके लिए मरा

और जी उठा। पौलुस के लिए, अनुग्रह का मुफ्त उपहार इस तथ्य को दर्शाता है कि देना मुफ्त था।

देने को हमारे किसी भी कार्य द्वारा मजबूर नहीं किया जा सकता। जैसा कि वह रोमियों 11 में लिखता है, किसने कभी परमेश्वर को दिया है कि परमेश्वर उन्हें वापस दे? देना मुफ्त और बिना किसी दबाव के है, लेकिन प्राप्त करना परमेश्वर के प्रति दायित्व का रिश्ता बनाता है। यह तथ्य कि हम इस बारे में बात करने में असहज हो सकते हैं, यह दर्शाता है कि हम पौलुस के अपने सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक प्रथाओं से कितने दूर हैं और अगर हम वास्तव में उसकी बात सुनना चाहते हैं तो हमें कितना काम करने की ज़रूरत है।

इसलिए, मुझे लगता है कि नए नियम को पढ़ने वाले विदेशियों के रूप में हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम खुद को पहली सदी के भूमध्यसागरीय सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक मैट्रिक्स में डुबो दें ताकि हम समझ सकें कि एक पाठ में उन प्राचीन श्रोताओं को क्या प्रेरित करेगा और क्यों, और ताकि हम उन तर्कपूर्ण संबंधों को बेहतर ढंग से समझ सकें जो लेखक मानता है कि उसके श्रोता प्रदान करेंगे बजाय इसके कि हम अपने स्वयं के मान लें और प्रदान करें, जो कि, जैसा कि अभी दिखाए गए उदाहरण में है, प्राचीन लेखक द्वारा मान लिए गए तर्क के लिए बिल्कुल विदेशी हो सकते हैं। नए नियम के सांस्कृतिक मैट्रिक्स पर ध्यान देने से हमें उन चुनौतियों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है जो उन प्राचीन श्रोताओं के सामने उनके संदर्भों में हैं, साथ ही साथ वे चुनौतियाँ भी जो नए नियम के लेखक अपने श्रोताओं के सामने पेश कर रहे हैं ताकि उन्हें एक नए विशिष्ट प्रकार के समुदाय में ढाल सकें। अंत में, इन सांस्कृतिक मूल्यों और प्रथाओं पर ध्यान देने से हमें इस बारे में अधिक स्पष्ट रूप से सोचने में मदद मिलती है कि नए नियम के लेखकों की चुनौतियों को खुद पर और हमारी कलीसियाओं पर एक नई संस्कृति में कैसे लागू किया जाए।

इस आरंभिक व्याख्यान में, मैं प्राचीन दुनिया में सम्मान और शर्म के सांस्कृतिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, विशेष रूप से नए नियम के लेखन के प्रथम शताब्दी के भूमध्यसागरीय वातावरण पर। भूमध्यसागरीय दुनिया के निवासियों के बीच सम्मान एक प्रमुख मूल्य है। व्यापक सामान्यीकरण करना कठिन और शायद कुछ मायनों में नासमझी भरा है, लेकिन यह एक विशेष सामान्यीकरण कि पहली शताब्दी में भूमध्यसागरीय लोग सम्मान को महत्व देते थे और सम्मान के बारे में सोचते थे, व्यापक साक्ष्य के आधार पर काफी उचित लगता है जो उस दिशा में इशारा करते हैं, कम से कम इटली से लेकर पूर्वी भूमध्यसागर से लेकर उत्तरी अफ्रीका तक।

उदाहरण के लिए, हम सेनेका द्वारा लिखे गए ऑन बेनिफिट्स नामक ग्रंथ में पढ़ते हैं, जो पहली सदी के रोमन दार्शनिक और राजनेता थे, एक विशिष्ट लेखक जो नीरो के वयस्क होने पर उसके शिक्षक थे। कृपया इस आधार पर सेनेका का मूल्यांकन न करें। लेकिन सेनेका लिखते हैं कि एक दृढ़ विश्वास जिससे हम अन्य बिंदुओं के प्रमाण की ओर बढ़ते हैं, वह यह है: जो सम्माननीय है उसे किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि इसलिए प्रिय माना जाता है क्योंकि वह सम्माननीय है।

सेनेका यहाँ पहली सदी से अपने संसार के मूल्यों के बारे में हमसे बात करने के लिए बात करते हैं, और वे आधारभूत मूल्य को सम्मान के मूल्य के रूप में पहचानते हैं। अगर कोई चीज़

सम्माननीय है, तो वह अपने आप ही वांछनीय है। इसके विपरीत, हम अनुमान लगा सकते हैं कि अगर कोई चीज़ अपमानजनक है या अपमान की ओर ले जाएगी, तो यह उन लोगों के लिए स्वाभाविक रूप से, मौलिक रूप से अवांछनीय है जिन्हें सेनेका जानते हैं।

वह हमें यह भी बताता है कि सम्मान के बारे में विचार, इसे कैसे प्राप्त किया जाए, इसे कैसे बनाए रखा जाए, और क्या कारण हो सकते हैं कि हम इसे खो दें, सम्मान के बारे में विचार निर्णय लेने के लिए आधारभूत हैं। जब वह लिखता है कि वह और उसके साथी सम्माननीय क्या है इस पर विचार करने से आगे बढ़कर अन्य बिंदुओं के प्रमाण की ओर बढ़ते हैं, तो वह हमें बता रहा है कि लोगों के लिए अंतिम तर्क, जैसा कि उसने देखा है, यह है कि कोई चीज़ सम्माननीय है या अपमानजनक। अन्य मूल्यों को अक्सर सम्माननीय के साथ-साथ महत्वपूर्ण विचारों के रूप में रखा जाता है, लेकिन यदि संघर्ष स्पष्ट रूप से किया जाता है तो ये सम्माननीय को मात नहीं देंगे।

उदाहरण के लिए, हमारे पास प्राचीन दुनिया के बहुत सारे ग्रंथ हैं जो इस बारे में बात करते हैं कि लोगों को कैसे राजी किया जाए, लोगों को वह करने के लिए कैसे मजबूर किया जाए जो आप उनसे करवाना चाहते हैं, या वह निर्णय कैसे लिया जाए जो आप उनसे करवाना चाहते हैं। ये बयानबाजी और प्रेरक भाषण पर प्राचीन या शास्त्रीय पुस्तिकाएँ हैं। इन पुस्तिकाओं में, हम कई उद्देश्यों के बारे में पढ़ते हैं जो लोगों को माननीय लोगों के साथ प्रेरित करते हैं, जिनका हमेशा उल्लेख किया जाता है।

सम्माननीय के साथ-साथ, आप उस चीज़ का सामना कर सकते हैं जो सुरक्षा के लिए ज़रूरी है, जो सुरक्षा के लिए ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, रैटोरिका विज्ञापन हेरेनियम, जो लगभग 50 ई.पू. की अनुनय पर लिखी गई लैटिन पुस्तक है, कहती है कि निर्णय लेने में दो प्रेरक उद्देश्य सम्मान और सुरक्षा हैं। लेकिन वही लेखक कहता है कि अगर इन दो मूल्यों के बीच कोई संघर्ष है, तो सम्मान हमेशा जीतेगा।

आप कभी भी यह स्वीकार नहीं कर सकते कि सुरक्षा की ओर ले जाने वाला मार्ग अपमानजनक है और अपने श्रोताओं को मनाने की उम्मीद कर सकते हैं। या अगर हम नैतिकता पर अपनी पुस्तकों में अरस्तू के पास और भी पीछे जाएं, तो अरस्तू ने फिर से सम्मान को एक प्रेरक चिंता के रूप में पहचाना है, लेकिन यह एक खुशी और लाभ भी है। लेकिन वह भी कहेगा कि जहां संघर्ष है, वहां सम्मान प्राथमिक विचार होगा।

यदि आप दर्शकों का दिल जीतना चाहते हैं, तो आप उन्हें खुले तौर पर अपमानजनक रास्ते पर नहीं ले जा सकते। यह सब कहने का मतलब है कि हमारे पास बहुत सारे सबूत हैं जो सम्मान और शर्म को मौलिक, निर्णायक मूल्यों के रूप में इंगित करते हैं। और यह कि भले ही वे अन्य प्रमुख मूल्यों और विचारों के साथ मौजूद हों, लेकिन कई प्राचीन लेखक इन्हें निर्णय लेने के अंतिम चालक के रूप में पहचानते हैं।

नीतिवचन की पुस्तक या कुछ बाद में अप्रमाणिक बेन सिराह की बुद्धि को स्कैन करने के लिए कुछ समय निकालना एक उपयोगी अभ्यास हो सकता है। ध्यान दें कि कितनी बार उन पुस्तकों के लेखक किसी व्यवहार या अभ्यास की प्रशंसा केवल यह कहकर करते हैं कि यह

सम्मानजनक है या यह अच्छा भी है, जैसा कि अक्सर इसका अनुवाद किया जाता है। लेकिन जिस शब्द का अनुवाद किया जाता है वह अक्सर, कम से कम बेन सिराह में, कलोन, महान होता है।

ऐसा करना नेक है। और कितनी बार किसी काम को सिर्फ़ इसलिए न करने की सलाह दी जाती है क्योंकि उसे अपमानजनक कहा जाता है। एक्स करना शर्मनाक है। और बहुत बार, इन लेखकों में से एक को लगता है कि यह छात्र को एक्स करने से रोकने के लिए पर्याप्त तर्क है। अब, सम्मान एक सामाजिक मूल्य है।

कहने का तात्पर्य यह है कि सम्मान दूसरों के समूह द्वारा दिया जाता है। मेरे पास आत्म-सम्मान हो सकता है, लेकिन मेरे पास तब तक सम्मान नहीं है जब तक कि दूसरे लोग यह न कहें कि मेरे पास है और उनके समूह के सदस्य के रूप में मेरे मूल्य का सकारात्मक मूल्यांकन न करें। हर समूह जिसके लिए सम्मान और शर्म महत्वपूर्ण मूल्य हैं, हर समूह यह तय करता है कि सम्मानजनक व्यवहार क्या है और क्या एक सम्मानजनक व्यक्ति बनाता है।

और अक्सर, ये वे चीजें होती हैं, जिन्हें अगर कोई व्यक्ति करता है, तो वे कल्याण और अस्तित्व, समूह के रखरखाव में योगदान देते हैं। और इसलिए, एक सम्मान संस्कृति में, मेरे समाज के अन्य लोगों का मुझ पर बहुत अधिक सामाजिक नियंत्रण है क्योंकि मैं उनकी पुष्टि चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे इस बात पर विचार करें कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैं क्या अभ्यास कर रहा हूँ, और मैं जो दृष्टिकोण और कार्य प्रदर्शित करता हूँ, वे उनकी दृष्टि में मूल्यवान हैं।

इसलिए, मैं समूह के विकास और अस्तित्व के लिए वही करने की संभावना रखता हूँ जो समूह को मुझसे करने की आवश्यकता है। और शायद मैं उन मूल्यों को पूरा करने के अपने स्वयं के आकलन के आधार पर आत्म-सम्मान या आत्म-सम्मान प्राप्त करूँगा। लेकिन सम्मान के लिए, फिर से, दूसरों द्वारा सम्मान की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, बहुत अधिक संज्ञानात्मक असंगति की संभावना भी होती है, जहाँ व्यक्ति उन मूल्यों को पूरा करने में विश्वास कर सकता है, लेकिन उसके महत्वपूर्ण अन्य लोगों द्वारा इसकी पुष्टि से इनकार किया जा सकता है। इस संदर्भ में, शर्म के मूलतः दो अलग-अलग अर्थ हैं। हम शर्म के बारे में अपमान, अपमान और समूह की अस्वीकृति के अनुभव के संदर्भ में बात कर सकते हैं।

समूह यह संदेश भेज रहा है कि आप जो कर रहे हैं वह मूल्यवान नहीं है। यह इस समूह की पहचान और इसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अच्छा नहीं है। पूरी तरह से दूसरे अर्थ में, शर्म का मतलब विनम्रता या समूह की स्वीकृति के लिए चिंता से कहीं अधिक सकारात्मक है।

इसलिए, सम्मान की संस्कृति में लोगों में अक्सर शर्म की तीव्र भावना होती है, जो उन्हें नकारात्मक अर्थ में शर्म से बचने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करती है, अक्सर हर कीमत पर। पहली सदी के भूमध्यसागरीय क्षेत्र में, हम दो प्रकार की गुणवत्ता या गतिविधि के आधार पर सम्मान प्राप्त करने या उसका आनंद लेने के बारे में बात कर सकते हैं। इनमें से एक घटक वह होगा जिसे हम आरोपित सम्मान कह सकते हैं, जिसे आरोपित सम्मान भी कहा जाता है।

ये सब जन्म के संयोग हैं। मैं एक खास परिवार में पैदा हुआ हूँ, और उस परिवार की एक खास हैसियत और एक खास सामूहिक सम्मान है। मैं उस परिवार में पैदा होने के कारण उस हैसियत, उस सामूहिक सम्मान का उत्तराधिकारी हूँ।

कभी-कभी किसी जातीय समूह को एक निश्चित सम्मान मिलता है या नहीं मिलता। और विभिन्न जातीय समूह, जैसा कि हम प्राचीन साहित्य में पढ़ते हैं, विभिन्न जातीय समूह अक्सर सम्मान के अपने सापेक्ष दावों को लेकर प्रतिस्पर्धा करते हैं। लेकिन फिर ऐसे तरीके भी हैं जिनसे मैं अपना सम्मान बढ़ा सकता हूँ।

इसलिए हम अर्जित सम्मान की बात कर सकते हैं। यह मेरे द्वारा किए गए कार्यों और मेरे द्वारा किए गए कामों में होगा, इस हद तक कि ये कार्य उस समूह के मूल्यों या गुणों को दर्शाते हैं जिससे मैं संबंधित हूँ। सम्मान और सम्मान की कमी, शर्मिंदगी, भी कई तरीकों से प्रदर्शित की जा सकती है।

जब हम प्राचीन ग्रंथों को पढ़ते हैं, तो हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि भौतिक शरीरों के साथ क्या होता है, उन्हें एक दूसरे के साथ किस तरह से रखा जाता है, और उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, बैठने की व्यवस्था अक्सर सापेक्ष सम्मान के बारे में निर्णयों को दर्शाती है। इसलिए, मेरे दाहिने हाथ पर बैठने का निमंत्रण आम तौर पर सम्मान के स्थान पर बैठने का निमंत्रण होता है और इसलिए, उस सभा में अन्य लोगों पर वरीयता का आनंद लेते हैं।

किसी मुखिया के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, साथ ही किसी शारीरिक मुखिया के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, यह समूह की ओर से सम्मान के निर्णयों को दर्शाता है। यदि उस मुखिया का अभिषेक किया जाता है, तो उस व्यक्ति को किसी विशेष पद का सम्मान दिया जाता है, शायद पुजारी या राजा का। यदि किसी मुखिया को माला पहनाई जाती है या ताज पहनाया जाता है, तो उस व्यक्ति को प्रत्यक्ष और सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाता है।

उदाहरण के लिए, किसी एथलेटिक प्रतियोगिता के विजेता को पुष्पमाला मिलेगी। सिर पर पुष्पमाला पहनाने की क्रिया सम्मान दिए जाने और उसे लागू किए जाने का प्रतीकात्मक प्रदर्शन है। या यदि उस सिर पर थप्पड़ मारा जाता है, उदाहरण के लिए, यीशु के मुकदमे और मज़ाक में, तो यह अपमान, शर्म, सम्मान को चुनौती, स्थिति हास अनुष्ठान का हिस्सा है, जो उस व्यक्ति के सम्मान की किसी भी भावना को छीन लेता है।

हमें इन ग्रंथों में नाम या प्रतिष्ठा के उल्लेख पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रतिष्ठा एक तरह से स्पष्ट है; वह प्रसिद्धि है, यानी वह सम्मान जो किसी व्यक्ति को उसकी शारीरिक उपस्थिति से परे मिलता है। लेकिन नाम अपने आप में एक तरह का मेटोनीमी बन जाता है, किसी व्यक्ति के सम्मान के लिए एक तरह का प्रतीक या आकृति।

क्या किसी नाम की बदनामी होती है? क्या किसी नाम के बारे में अच्छी तरह से बात की जाती है? यह एक तरह का कोड है जिसके ज़रिए दुनिया में किसी व्यक्ति के सम्मान को मौखिक रूप से

दर्शाया जाता है। जब हम प्रार्थना करते हैं, तेरा नाम पवित्र हो, तो हम कम से कम यह प्रार्थना कर रहे होते हैं कि ईश्वर का सम्मान पृथ्वी पर अधिक से अधिक व्यापक रूप से पहचाना जाए, ठीक उसी तरह जैसे ईश्वर का सम्मान स्वर्गीय क्षेत्रों में पहचाना जाता है। सम्मान और लिंग के बारे में शायद एक शब्द उचित होगा।

पहली सदी की दुनिया में, और यह वास्तव में आज भी कई भूमध्यसागरीय संस्कृतियों में कायम है, और आज भी सेमिटिक संस्कृतियों और मध्य पूर्वी संस्कृतियों में, एक महिला के सम्मान को पुरुष के सम्मान से बिल्कुल अलग तरीके से समझा जाता है। पुरुष अक्सर सार्वजनिक रूप से बाहर होते हैं, अक्सर एक दूसरे को सम्मान देने की होड़ में लगे रहते हैं। लेकिन कई प्राचीन ग्रंथों में, हम पढ़ते हैं कि सम्मान पाने के लिए एक महिला का क्षेत्र वास्तव में घर के अंदर ही है।

यह घर के निजी स्थान हैं, या अगर यह घर के बाहर है, तो यह सार्वजनिक स्थान हैं जहाँ महिलाएँ अक्सर आती-जाती रहती हैं या उनके साथ कोई पुरुष, पति, पिता या भाई रहता है, जो उस परिवार का कोई प्रतिनिधि है जिसके भीतर महिला का सम्मान अंतर्निहित है। जाहिर है, हम यहाँ पितृसत्तात्मक समाजों को देख रहे हैं, प्राचीन दुनिया में भारी लिंग-पक्षपाती समाज, जिसमें एक महिला को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं बल्कि हमेशा किसी पुरुष के घर का विस्तार माना जाता है और इसलिए, उस पुरुष का सम्मान। और इसलिए हम इस दुनिया में स्त्री सम्मान के मूल के रूप में शालीनता के बारे में बहुत कुछ पढ़ते हैं, खुद को दूसरे पुरुषों के स्पर्श, नज़रों और बातचीत से दूर रखना।

विवाह के बाहर किसी महिला पर कोई भी यौन प्रयास, चाहे सहमति से हो या अन्यथा, अन्य बातों के अलावा, उस पुरुष के सम्मान के लिए खतरा है जिसके साथ वह वैचारिक रूप से जुड़ी हुई है, चाहे वह उसका पति हो या उसका पिता। प्राचीन साहित्य में महिलाओं को उन गुणों के उदाहरण के रूप में सराहा जा सकता है, जिनसे आमतौर पर पुरुष जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, साहस।

साहस को हम मर्दाना गुण कह सकते हैं क्योंकि ग्रीक में, शब्द, वास्तव में, एंड्रिया है। इसका अनुवाद मर्दानगी के रूप में किया जा सकता है। प्राचीन साहित्य में कई महिलाओं को साहसी के रूप में सराहा गया है, उदाहरण के लिए, इस नाम से अपोक्रीफल पुस्तक में नायिका जूडिथ या एक अन्य अपोक्रीफल पाठ, चौथे मैकाबीज़ में सात शहीदों की माँ।

प्लूटार्क, जो लगभग 100 से 120 ई. के बीच एक यूनानी लेखक थे, ने ऑन द मैनलीनेस, ऑन द ब्रेवरी ऑफ़ विमेन नामक एक संपूर्ण ग्रंथ लिखा, जिसमें ऐतिहासिक महिला पात्रों की उनके साहस के लिए प्रशंसा की गई। लेकिन इन सभी मामलों में, महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक मर्दाना मानने के साथ-साथ, कुछ मामलों में, विनम्रता, शुद्धता, सार्वजनिक स्थान और सार्वजनिक दृष्टि से दूर रहने और यथासंभव स्पर्श के अधिक पारंपरिक अर्थों में महिला सम्मान पर भी ध्यान दिया जाता है। अब, यदि किसी व्यक्ति को सम्मान को महत्व देना और शर्म से डरना सिखाया जाता है, जो शायद सबसे बुनियादी अच्छाई और बुराई है जिसका वह अनुभव कर सकता है, तो वह समूह जिसका वह हिस्सा है, उस व्यक्ति पर, उन सभी व्यक्तियों पर बहुत प्रभावी ढंग से सामाजिक नियंत्रण कर सकता है।

अगर मुझे अपने साथियों की स्वीकृति की चाहत में पाला गया है, तो उन साथियों के पास मेरी अनुरूपता को लागू करने की बहुत शक्ति है। यह प्राचीन दुनिया में नैतिकता की एक आवश्यक विशेषता है। सम्मान के लिए प्रेरित होने के कारण, समूह लोगों को उन मूल्यों के अनुरूप रखने में सक्षम होते हैं जिन्हें समूह के लोगों को समूह की भलाई के लिए अपनाने की आवश्यकता होती है।

मैं उन प्रथाओं और मूल्यों को अपनाऊंगा जिन्हें वह समूह महत्व देता है जिसका मैं हिस्सा हूँ और चाहता है कि मैं भी अपनाऊँ। इसलिए, मैं अपने पूरे जीवन में, यहां तक कि शुरू से अंत तक अपने स्वयं के हितों से भी ऊपर, समूह के सर्वोत्तम हितों की सेवा करने के लिए तैयार हूँ। यह 21वीं सदी की पश्चिमी संस्कृति और पहली सदी की भूमध्यसागरीय संस्कृति के बीच एक और बड़ा अंतर है।

मैं यहाँ खड़ा हूँ, मुझे पता है कि स्वार्थ वास्तव में एक मजबूत प्रेरक कारक है। मेरे अपने जीवन में भी, आत्मा के काम के बावजूद। लेकिन स्वार्थ, जिस हद तक हम इसे बढ़ावा देते हैं, इसका सम्मान करते हैं, और 21वीं सदी में इसके अनुसार जीते हैं, वह पश्चिमी व्यक्तिवाद का एक उत्पाद है।

पहली सदी के भूमध्यसागरीय विश्व में यह शायद ही संभव है। यह उस दुनिया में एक विसंगति होगी। यह बेशर्मा व्यक्ति होगा, वह व्यक्ति जिसके साथ समाज को यह नहीं पता कि क्या करना है, जो समूह हित से ज़्यादा स्वार्थ को आगे बढ़ाने में सक्षम था।

यह कैसे काम करता है, इसके कुछ उदाहरण। प्राचीन दुनिया में, वास्तव में आज भी, साहस एक आवश्यक गुण है, बहादुरी, धैर्य, और अपने समूह की भलाई के लिए शारीरिक नुकसान सहने की इच्छा। मैंने खुद कभी सेना में सेवा नहीं की है।

जो लोग जानते हैं वे जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। लेकिन प्राचीन दुनिया में, आज के पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत अधिक लोगों को सेना में सेवा करने के लिए बुलाया जा सकता था। और अगर आप चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में वापस जाएँ, तो ग्रीस में किसी भी पुरुष को सेना में सेवा करने के लिए बुलाया जा सकता था।

और आपके शहर-राज्य का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता था कि आप वहाँ जाकर भाला खाकर अपनी जांघ में चोट खाने के लिए तैयार हैं या इससे भी बदतर, अपने शहर-राज्य के लिए। इसलिए, शहर-राज्यों ने साहसी लोगों का सम्मान किया। और मैं, एक चौथी शताब्दी ईसा पूर्व एथेनियन के रूप में, जन्म से ही साहस को एक महान गुण के रूप में मानने के लिए पाला गया हूँ, जो सुरक्षा, आराम और जीवन से भी अधिक मूल्यवान है।

और इसलिए, जब मैं सैनिकों, विशेष रूप से शहीद सैनिकों की प्रशंसा सुनता हूँ, जब मैं उनकी अमर प्रसिद्धि पर अंतिम संस्कार के भाषण सुनता हूँ, तो मैं भी वैसा ही करने के लिए तैयार हो जाता हूँ। और इस तरह, शहर-राज्य बच जाता है। और इसलिए, विद्रोही प्रांत, उदाहरण के लिए,

66 से 70 ईस्वी में जूडिया, रोम के खिलाफ कुछ करने में सक्षम है, अंततः बुरी तरह असफल रहा।

लेकिन समूह की भलाई को प्राथमिकता देने की इस प्रतिबद्धता के कारण, चाहे इसके लिए खुद को कितनी भी कीमत चुकानी पड़े, साहस सबसे पहले आता है। उदारता एक और अनुकरणीय मूल्य होगा। इस दुनिया में, अगर आपके शहर में, आपके गांव में कोई नागरिक सुधार होने वाला था, तो यह होने वाला था, यह होने वाला था, माफ कीजिए, यह इसलिए होने वाला था क्योंकि कोई अमीर व्यक्ति इसे करने वाला था।

ऐसा इसलिए नहीं होने वाला था क्योंकि खेती से प्राप्त करों का एक प्रतिशत सड़क सुधार, मंदिर निर्माण, या सेफोरिस शहर में आप सभी के लिए एक अच्छा नया सार्वजनिक स्नानघर बनाने में खर्च किया जा रहा था। ऐसा इसलिए था क्योंकि कोई व्यक्ति इतना उदार होने के लिए इच्छुक था। नागरिक सुधार के लिए कोई व्यक्ति इतना पैसा क्यों खर्च करेगा? सम्मान की आशा और यह तथ्य कि भूमध्य सागर के आसपास की संस्कृतियाँ उदार व्यक्ति को वह देती हैं जो वह सबसे अधिक चाहता है, वह जो सभी लोग, बेशर्म लोगों को छोड़कर, सबसे अधिक चाहते हैं।

सम्मान, पुष्टि, प्रसिद्धि, एक गुणी और मूल्यवान इंसान होने की प्रतिष्ठा, कई मामलों में, अन्य मनुष्यों से ऊपर। और इसलिए, एरास्टस, जो शायद वह एरास्टस भी हो जिसे हम कोरिंथियन चर्च से जानते हैं, कोरिंथियन थिएटर के सामने अपने खर्च पर एक फुटपाथ बिछाता है जब उसे एडेल होने का नागरिक पद दिया जाता है, क्योंकि वह इस घटना को एक उदार कार्य के साथ याद करना चाहता है जो सचमुच 2,000 से अधिक वर्षों के लिए उसकी प्रसिद्धि को पत्थर पर उकेर देगा। आप इसे आज भी वहां देख सकते हैं।

और इसलिए, सम्मान की यह लालसा सामाजिक नियंत्रण का एक बहुत ही प्रभावी साधन बन जाती है और हमें व्यक्तियों के रूप में खुद को समग्रता के लिए समर्पित करने का एक तरीका बन जाती है। अब तक मैंने जो कुछ भी कहा है, उसमें मैंने यह मान लिया है कि एक समूह है जिसके साथ मैं काम कर रहा हूँ और जिसकी नज़र में मैं सम्मान चाहता हूँ। पहली सदी के भूमध्यसागरीय दुनिया में किसी भी स्थान पर ऐसा लगभग कभी नहीं होता है।

इसमें जटिलताएँ हैं क्योंकि कई समूह एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास थोड़े या बहुत अलग-अलग मूल्य और सम्माननीय चीज़ों की अलग-अलग परिभाषाएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, चूँकि यह धर्मशास्त्र के छात्रों के लिए प्रासंगिक है, इसलिए मैं यूनानी शहर में रहने वाले एक यहूदी का मामला लेना चाहूँगा, चाहे वह समुद्र के किनारे अलेक्जेंड्रिया हो या कैसरिया। यहूदी के लिए जो सम्माननीय है, वह अक्सर गैर-यहूदियों की नज़र में उसका सम्मान खो देता है।

उदाहरण के लिए, एक सम्माननीय यहूदी होने के लिए, किसी भी कीमत पर मूर्तिपूजा से बचना चाहिए। कोई भी व्यक्ति मंदिर के पास से थोड़ी सी भी दूरी पर नहीं जाता। वह मूर्तियों को बलि दिए जाने वाले खाद्य पदार्थों, मंदिरों में बलि के जानवरों से प्राप्त मांस के प्रदूषण से हर तरह के संबंध से दूर रहता है।

यह सिर्फ एक घृणित बात है, घृणित है, यह मेरे जीवन का हिस्सा नहीं है। एक सम्माननीय यहूदी को खतना करवाना चाहिए और अपने पुरुष बच्चों, अपने पुरुष दासों और जो कुछ भी है उसका खतना करवाना चाहिए। सब्त का पालन करना, हर हफ्ते ईश्वर की लय के अनुरूप चलने की वह आवश्यक याद दिलाता है, वह ईश्वर जिसने छह दिनों में सब कुछ बनाया और सातवें दिन विश्राम किया।

और टोरा में बताए गए आहार नियमों का पालन करना, जिसके अनुसार गोमांस खाना, लेकिन सूअर का मांस नहीं, टूना खाना, लेकिन ईल नहीं, हम ईश्वर की अपनी हरकतों का अनुकरण करते हैं, ईश्वर की यहूदी लोगों को चुनने की अपनी हरकतों का, लेकिन गैर-यहूदी लोगों को नहीं। ये सभी चीजें किसी व्यक्ति को अपने साथी धर्मपरायण टोरा-पालन करने वाले यहूदियों की नज़र में सम्माननीय बनाती हैं। लेकिन शहर में रहने वाले यूनानी इन गतिविधियों को कैसे देखेंगे? एक धर्मपरायण यहूदी के रूप में, अपने अलावा सभी देवताओं से मेरा परहेज़ सिर्फ अहंकारी नास्तिकता की तरह लगेगा।

हर किसी के ईश्वर के अस्तित्व को नकारना सबसे खराब तरह की अधर्मिता के रूप में सामने आएगा। और इसलिए विडंबना यह है कि हम आधुनिक लोगों के लिए, यहूदियों को अक्सर प्राचीन दुनिया में नास्तिक कहा जाता है। इसलिए नहीं कि उनके पास कोई ईश्वर नहीं है, उनके पास एक है, लेकिन वे केवल उसी के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं, किसी और की नहीं।

तो, वे मूलतः नास्तिक थे। उन्होंने अपने बच्चों का क्या काटा? खतना को शरीर का बर्बर अंग-भंग माना जाता है, न कि प्रत्येक पुरुष शरीर पर ईश्वरीय वाचा का प्रशंसनीय अंकन। हर हफ्ते में से एक दिन छुट्टी लेकर कुछ भी न करने से यहूदियों को आलसी होने की प्रतिष्ठा मिलती है।

और आहार नियम शायद वही हैं जो गैर-यहूदियों को सबसे ज़्यादा परेशान करते हैं। क्योंकि सूअर का मांस दूसरा सफ़ेद मांस है, इसलिए यह स्वादिष्ट होता है। प्रकृति ने इसे अपनी उदारता के हिस्से के रूप में प्रदान किया है।

इसे अशुद्ध चीज़ मानकर टालना देवताओं या प्रकृति के साथ अन्याय है जिसने इसे कई अन्य अद्भुत, स्वादिष्ट, पौष्टिक चीज़ों के साथ प्रदान किया है। इसलिए, मैं अन्य पवित्र टोरा-पालन करने वाले यहूदियों की नज़र में एक धर्मनिष्ठ यहूदी का सम्मान प्राप्त कर सकता हूँ, लेकिन वही गतिविधियाँ मुझे शहर की गैर-यहूदी आबादी के कई, शायद बहुसंख्यकों की नज़र में अपमानित करेंगी। निष्पक्ष रूप से कहें तो, हमेशा कुछ गैर-यहूदी होते हैं, खासकर दार्शनिक वर्ग में, जो यहूदी धर्म को एक तरह के कठोर अनुशासन के रूप में देखते हैं जिसके अपने गुण हैं।

लेकिन वे प्राचीन दुनिया के शिक्षाविद हैं, और कोई भी उनकी बात नहीं सुनता। कुल मिलाकर, यहूदी होने का मतलब है कई यूनानियों और रोमनों की नज़र में तिरस्कृत होना। अगर मुझे सम्मान चाहिए, तो मैं क्या करूँगा? अगर मैं एक बड़े पैमाने पर ग्रीक शहर में यहूदी अल्पसंख्यक समूह का हिस्सा हूँ, तो मैं क्या करूँगा? कई, खैर, मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए क्योंकि मैंने वास्तव में कभी इसका परिमाण नहीं बताया है, लेकिन हम कुछ खास यहूदियों के बारे में जानते हैं जिनकी सम्मान की चाहत ने उन्हें उनके प्रशिक्षण, उनके मूल जीवन के तरीके से दूर कर

दिया, कुछ हद तक और कुछ मामलों में पूरी तरह से धर्मत्याग करने के लिए, ताकि वे बड़ी प्रमुख संस्कृति की नज़र में सम्मान का आनंद ले सकें।

यदि कोई अल्पसंख्यक समूह, जैसे कि यहूदी लोग, प्राचीन दुनिया में थे, यदि किसी अल्पसंख्यक समूह को अपने सदस्यों, अपने सम्मान-संवेदनशील सदस्यों को बनाए रखना है, तो उसे कुछ ऐसी रणनीतियाँ विकसित करने की आवश्यकता है जो उन्हें समूह के सम्मान पर मूल्यवान भलाई के रूप में केंद्रित रखें, अपने सदस्यों को उन प्रथाओं और प्रतिबद्धताओं के अनुरूप सम्मान प्राप्त करने पर केंद्रित रखें जो समूह की संस्कृति और समूह की पहचान को बनाए रखेंगे, बजाय इसके कि वे किसी प्रतिस्पर्धी समूह की संस्कृति की ओर आकर्षित हों क्योंकि उस प्रतिस्पर्धी समूह की नज़र में सम्मान या अपमान की संभावना है। इसलिए, मैं इस व्याख्यान के अंतिम भाग में उन रणनीतियों के बारे में बताने के लिए कुछ समय लेना चाहूँगा क्योंकि वे रणनीतियाँ हैं जिन्हें हम पूरे नए नियम में लागू पाएँगे क्योंकि प्रारंभिक ईसाई धर्म प्राचीन दुनिया में अल्पसंख्यक समूह था। यदि आपको लगता है कि इफिसुस में यहूदी होना कठिन था, शायद एक लाख का समुदाय, तो इफिसुस में ईसाई होने का प्रयास करें, शायद 50 का समुदाय।

इसलिए, हमें वास्तव में, पॉल के समय में, बहुत कम, हम सिर्फ दर्जनों लोगों की बात कर रहे हैं, सैकड़ों लोगों की भी नहीं। इसलिए, हम पाते हैं कि नए नियम के लेखक इस मामले पर विशेष रूप से ध्यान देते हैं कि अपने धर्मांतरित लोगों को इस बात पर कैसे ध्यान केंद्रित करना है कि समूह, ईसाई समूह किस चीज़ को सम्माननीय मानता है और बाहर से सम्मान की अपील और बाहर से अपमान के दंश को कैसे दूर करना है। इसलिए, एक चीज़ जो हम अल्पसंख्यक समूहों को करते हुए पाते हैं, वह है सावधानीपूर्वक परिभाषित करना कि सम्माननीय क्या है।

यहाँ मेरे पास बेन सिराह की बुद्धि से एक उदाहरण है। बेन सिराह एक यहूदी था जो यरूशलेम के एक स्कूल में पढ़ाता था। उसने यरूशलेम में एक शिक्षण गृह बनाया था।

वह संभवतः 200 से 175 ईसा पूर्व के बीच सक्रिय था। और वह यह लिखता है: किसकी संतान सम्मान के योग्य है? मानव संतान। किसकी संतान सम्मान के योग्य है? जो प्रभु से डरते हैं।

किसकी संतान सम्मान के योग्य नहीं है? मानव संतान। किसकी संतान सम्मान के योग्य नहीं है? जो आज्ञाओं को तोड़ते हैं। परिवार के सदस्यों में, उनका नेता सम्मान के योग्य है, लेकिन जो लोग प्रभु का भय मानते हैं वे उसकी नज़र में सम्मान के योग्य हैं।

धनवान, प्रतिष्ठित और निर्धन। उनकी महिमा यहोवा का भय है। जो बुद्धिमान है, परन्तु निर्धन है, उसे तुच्छ समझना उचित नहीं है।

और जो पापी है उसका सम्मान करना उचित नहीं है। राजकुमार, शासक और न्यायाधीश का सम्मान किया जाता है, लेकिन उनमें से कोई भी उस व्यक्ति से बड़ा नहीं है जो प्रभु का भय मानता है। इस पाठ में, बेन सिराह कई काम करता है।

सबसे पहले, वह इस बात की मूल परिभाषा बताता है कि कौन सी चीज़ किसी व्यक्ति को सम्माननीय बनाती है। सवाल यह है कि क्या वह व्यक्ति टोरा, मूसा के कानून का पालन करता है

या नहीं। यही बात एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक सम्माननीय व्यक्ति को दूसरे अपमानजनक व्यक्ति से अलग करती है।

और वह यह भी कहते हैं कि यह अंततः किसी व्यक्ति का किसी भी सांसारिक विचार से ऊपर सम्मान पाने का दावा है। अमीर, शक्तिशाली, धनी और उच्च पद वाले लोगों को उस समय भी सम्मानित किया जाता था जैसा कि अब किया जाता है। लेकिन बेन सिराह कहते हैं कि इनमें से कोई भी बाहरी विशेषता उस व्यक्ति के सम्माननीय होने के मूल में नहीं है।

अमीर, प्रतिष्ठित और गरीब। उनकी महिमा, सम्मान का उनका दावा, उनका प्रभु का भय है। अंततः, अगर कोई व्यक्ति आज्ञाओं का उल्लंघन भी करता है तो किसी और चीज के आधार पर सम्मान गलत तरीके से दिया जाता है।

इसलिए, इस तरह के ग्रंथों में, हम दूसरी शताब्दी में यहूदिया में भी, एक बढ़ती हुई अल्पसंख्यक संस्कृति के प्रतिनिधि को पाते हैं। क्योंकि राष्ट्रों की तरह बनने, ग्रीक संस्कृति और ग्रीक रूप और ग्रीक नाम अपनाने और इस तरह उस बड़ी दुनिया में शामिल होने, और मानचित्र पर आने और उस बड़ी दुनिया के भीतर सम्मान की संभावना रखने की प्रेरणा बढ़ रही थी। वहाँ भी, हम बेन सिराह को इस रणनीति का उपयोग करते हुए पाते हैं।

यह परिभाषित करना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि किसकी राय मायने रखती है। मानवशास्त्रियों ने प्रतिष्ठा के न्यायालय या राय के न्यायालय के बारे में बात की है। वे कौन से महत्वपूर्ण लोग हैं जिनकी राय आपके बारे में मायने रखती है? और इस प्रकार, किसकी नज़र में सम्मान और शर्म मायने रखती है? फिर से, बेन सिराह की ओर मुड़ते हुए, हम पाते हैं कि वह इस प्रतिष्ठा के न्यायालय को स्वयं ईश्वर के इर्द-गिर्द केंद्रित करता है।

इसलिए, वह लिखता है, उसने उनसे कहा, परमेश्वर ने उनसे कहा, सब बुराई से सावधान रहो। और उसने उनमें से प्रत्येक को पड़ोसी के विषय में आज्ञाएँ दीं। उनके मार्ग हमेशा उसके लिए ज्ञात हैं।

वे उसकी आँखों से छिपे नहीं रहेंगे। और उसी किताब में थोड़ा आगे, जो व्यक्ति व्यभिचार करता है, उसका डर मानवीय आँखों तक ही सीमित है। और उसे यह एहसास नहीं होता कि प्रभु की आँखें सूरज से 10,000 गुना ज़्यादा चमकीली हैं।

वे मानव व्यवहार के हर पहलू को देखते हैं और छिपे हुए कोनों में झाँकते हैं। इन दोनों ग्रंथों में, बेन सिराह अपने शिष्यों को याद दिलाते हैं कि ईश्वर सब कुछ देखता है। और वह अंतिम न्यायालय है, जिसके सामने वे अपने जीवन के हर पल को खेलते हैं।

वे सार्वजनिक रूप से कितने घंटे बिताते हैं और वे अपने घर के सबसे गुप्त आंतरिक कमरे में कितने घंटे बिताते हैं। और, बेन सिराह चेतावनी देते हैं, प्रभु आपके रहस्यों को उजागर करेंगे। वह आपको मण्डली के बीच में ही उखाड़ फेंकेगा क्योंकि आपने प्रभु के प्रति उचित सम्मान के साथ संपर्क नहीं किया, और आपका हृदय कपट से भरा हुआ था।

इसलिए, अंततः, समाज में किसी व्यक्ति का सम्मान बनाए रखना या उसे नष्ट करना ईश्वर के हाथ में है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति ने ईश्वर की दृष्टि में सबसे पहले और सबसे बढ़कर जो सम्माननीय है, उसका अनुसरण किया है या नहीं। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बारूक के नाम से जाना जाने वाला एक और लेखन यिर्मयाह के लेखक बारूक की कलम से लिखा गया है, जो इज़राइल के बारे में बोलता है, फिर से पहले से ही दुनिया में अल्पसंख्यक संस्कृति होने के बारे में जानता है, इज़राइल धन्य है क्योंकि वह जानता है कि ईश्वर को क्या पसंद है। वह जानता है कि उसका सबसे महत्वपूर्ण दूसरा कौन है।

इसमें इस बारे में जानकारी है कि अपने महत्वपूर्ण दूसरे के सामने सम्मानपूर्वक कैसे जीना है ताकि उस तरह के सम्मान का आनंद लिया जा सके जो न केवल इस जीवनकाल के लिए बल्कि हमेशा के लिए रहेगा। प्रतिष्ठा के न्यायालय के बारे में बात करने की एक और महत्वपूर्ण विशेषता जो मायने रखती है वह यह है कि बाहरी लोगों को उनकी राय कहाँ से मिलती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर मेरे समूह के बाहरी लोग, प्रमुख ग्रीक या प्रमुख रोमन संस्कृति के सदस्य, अगर मेरे समूह के बाहरी लोग मेरे जीवन के विकल्पों और मेरे व्यवहारों के बारे में असहमति व्यक्त करते हैं, तो यह कहाँ से आता है? उनकी राय कितनी मूल्यवान है? संभवतः पहली शताब्दी ईसा पूर्व में मिस्र में लिखी गई एक पुस्तक, संभवतः पहली शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में, सोलोमन की बुद्धि है, एक और गलत तरीके से जिम्मेदार ठहराया गया पुस्तक।

यह डेविड के बेटे सुलैमान द्वारा नहीं लिखा गया था, बल्कि यहूदी ज्ञान परंपरा को विरासत में पाने वाले व्यक्ति द्वारा लिखा गया था। और वह लिखता है कि कैसे शक्तिशाली, अमीर, अधर्मी लोग ईश्वरीय व्यक्ति को देखते हैं। और वह कुछ विस्तार से बताता है कि कैसे अधर्मी लोग धर्मपरायण यहूदी को एक तरह से जीवित अपमान के रूप में देखते हैं क्योंकि धर्मपरायण यहूदी के मूल्य और व्यवहार बहुत अलग हैं।

और परमेश्वर के प्रति उसकी गवाही और उसके अपने जीवन के प्रति परमेश्वर की स्वीकृति के कारण, क्योंकि वह परमेश्वर के नियम के मार्ग पर चल रहा है। और इसलिए, लेखक लिखता है कि कैसे दुष्ट लोग धर्मनिष्ठ यहूदी को अपमान, निन्दा, हिंसा और अंत में शर्मनाक मौत के साथ परखते हैं। और उस तरह के दृश्य को देखते हुए, जिसके बारे में लेखक ने निस्संदेह वास्तविक जीवन में होने के बारे में सुना था, शायद वास्तविक जीवन में देखा भी हो, दुष्टों के तर्क के बारे में लिखता है और क्यों वे जो कुछ भी करते हैं, धर्मनिष्ठ व्यक्ति पर जो भी शर्मिंदगी वे लाते हैं वह मूल्यहीन है।

इसलिए, वह लिखते हैं, अधर्मी लोगों ने इसी तरह से तर्क किया, लेकिन वे गलत थे। उनकी दुर्भावना ने उन्हें पूरी तरह से अंधा कर दिया था। वे परमेश्वर की गुप्त योजना के बारे में नहीं जानते थे।

वे पवित्रता से मिलने वाले इनाम की उम्मीद नहीं करते थे। उन्होंने उस इनाम के बारे में नहीं सोचा जो उन्हें मिलेगा अगर वे अपनी आत्मा को दाग से मुक्त रखेंगे। वह बाद में उस किताब में बहुसंख्यक गैर-यहूदी दुनिया के बारे में लिखते हैं: सभी मनुष्य जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं वे स्वभाव से ही खाली दिमाग वाले हैं।

अच्छी चीजों को देखने के बावजूद, वे किसी तरह उस व्यक्ति को जानने में असमर्थ थे जो वास्तव में है। हालाँकि वे उसके द्वारा बनाई गई चीजों से मोहित थे, लेकिन वे सभी चीजों के निर्माता को पहचानने में असमर्थ थे। इसलिए, इन दो ग्रंथों में, हम देखते हैं कि लेखक कहता है कि आपके आस-पास के लोग जो यहूदी जीवन शैली के प्रति आपकी प्रतिबद्धता के कारण आपको तुच्छ समझते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके पास सभी तथ्य नहीं हैं।

उनके पास इस बारे में सभी तथ्य नहीं हैं कि असली ईश्वर कौन है, जबकि वे झूठे देवताओं की पूजा करते रहते हैं। उनके पास जीवन और न्याय तथा परलोक के बारे में सभी तथ्य नहीं हैं। और इसलिए, इतने अदूरदर्शी होने के कारण, वे अपने जीवन और मनुष्य के रूप में अपने स्वयं के मूल्य के बारे में गलत निर्णय लेने जा रहे हैं।

और वे आपको बेवकूफ़ और शर्मनाक मानेंगे, जबकि वास्तव में, वे ऐसा सिर्फ़ इसलिए करते हैं क्योंकि वे बेवकूफ़ और शर्मनाक हैं। उनके पास वह रहस्योद्घाटन नहीं है जो हमें मिला है। जैसा कि सुलैमान की बुद्धि के पाठ में आगे बताया गया है, वे बुरी तरह से जीते हैं।

वे शर्मनाक तरीके से जीते हैं। उनके लिए परमेश्वर के ज्ञान के बारे में गलत होना ही काफी नहीं था, बल्कि अज्ञानता के कारण बड़े संघर्ष में रहने के बावजूद, वे इतनी बड़ी बुराई को शांति कहते हैं। और अगर हम उस बड़े पैराग्राफ को पढ़ें जिसमें से वह श्लोक आता है, तो हम लेखक को यह कहते हुए देखेंगे, देखो कि गैर-यहूदी कैसे रहते हैं।

शराब पीना, हत्या, चोरी, अप्राकृतिक यौन संबंध। दरअसल, यह पाठ रोमियों 1:18 से 32 में पाए जाने वाले पाठ के बहुत करीब है। देखिए वे कैसे रहते हैं।

और अब विचार करें, जो लोग सद्गुण और दुर्गुण के मामले में इतने बेशर्म हैं, वे आपके सम्मान या आपकी शर्म के बारे में कुछ भी महत्वपूर्ण कैसे कह सकते हैं? मूर्तिपूजा वास्तव में एक मूर्तिपूजक धर्म था, जो गैर-यहूदी शहरों में रहने वाले यहूदियों के लिए एक बड़ी बाधा या संभावित बाधा थी क्योंकि यहूदी अल्पसंख्यक थे। और जब उन्होंने अपने आस-पास देखा, तो उन्होंने देखा कि अन्य मनुष्यों का एक समूह, उनकी संख्या से कहीं अधिक, इन अन्य देवताओं की पूजा उसी उत्साह, उसी भक्ति के साथ कर रहा था जैसा कि वे स्वयं इस्राएल के परमेश्वर के प्रति महसूस करते थे। और इसलिए यह सोचने का निरंतर प्रलोभन हो सकता है कि क्या उनके पास भी वैध धार्मिक प्रथा है? क्या मुझे इतना बंद दिमाग होना चाहिए कि मैं सोचूं कि मेरा ही एकमात्र ईश्वर है? मेरा जीवन जीने का तरीका, ईश्वर द्वारा स्वीकृत एकमात्र जीवन जीने का तरीका? और इसलिए, द विजडम ऑफ सोलोमन जैसे लेखक, इस तरह के गैर-यहूदी देशों में, इस तरह के प्रवासी समुदाय में यहूदी पहचान को बनाए रखने में मदद करना चाहते हैं, मूर्तिपूजा को एक घटना के रूप में समझने पर ध्यान देते हैं।

इसलिए, वे लिखते हैं, "मनुष्यों की गुमराह कला ने हमें धोखा नहीं दिया, न ही चतुर चित्रकारों की निरर्थक मेहनत ने, तब भी जब उन्होंने रंगों के संयोजन में एक ऐसी छवि बनाई जो चकाचौंध

करने वाली थी। हालाँकि, मूर्तियों को देखना मूर्खों में इच्छा पैदा करता है। वे एक मृत मूर्ति की बेजान छवि के लिए तरसने लगते हैं।

जो लोग उन्हें बनाते हैं, जो उन्हें चाहते हैं, और जो उनकी पूजा करते हैं, वे सभी दुष्ट चीजों के प्रेमी हैं। वे सभी इस तरह से अपनी आशाओं को गलत दिशा में ले जाने के लायक हैं। और इसलिए जो गैर-यहूदी मूल्यवान समझते हैं, और जिस तरह की धर्मपरायणता का गैर-यहूदी सम्मान करते हैं, वह भी कुछ ऐसा है जिसे यहूदी अल्पसंख्यक संस्कृति का यह लेखक संबोधित करेगा, ताकि इसकी संभावित अपील को कम किया जा सके और बहुसंख्यक संस्कृति की राय और व्यवहार को अंततः विचलित करने वाला बताया जा सके, न कि हमारा अल्पसंख्यक दृष्टिकोण।

एक और बात जो हम इन अल्पसंख्यक सांस्कृतिक नेताओं को अपने समूह के सदस्यों के लिए करते हुए पाते हैं, वह है बाहरी लोगों से अस्वीकृति के अनुभवों की पुनर्व्याख्या करना, जो अल्पसंख्यक समूह के भीतर सम्मान में योगदान करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, वे बाहरी लोगों द्वारा शर्मिंदा होने के अनुभव को ईश्वर और समूह की दृष्टि में सम्मान के बैज में बदल देते हैं। फिर से, सुलैमान की बुद्धि के साथ चिपके हुए, लेखक लिखते हैं कि मरने वाले धर्मी लोगों की आत्माओं को थोड़ा सा अनुशासित किया गया था, लेकिन उन्हें प्रचुर मात्रा में अच्छी चीजों से पुरस्कृत किया जाएगा क्योंकि भगवान ने उनका परीक्षण किया और पाया कि वे उसके साथ रहने के योग्य हैं।

उसने उन्हें भट्टी में सोने की तरह परखा। उसने उन्हें पूरी तरह से होमबलि की तरह स्वीकार किया। लेखक उन धर्मपरायण यहूदियों के बारे में लिख रहा है, जिनका उनके गैर-यहूदी पड़ोसियों ने, या शायद उनके धर्मत्यागी यहूदी पड़ोसियों ने भी उपहास किया, तिरस्कार किया, अपमान किया, गाली दी और अंततः उनकी हत्या भी कर दी।

वह इन अन्य लोगों द्वारा उनके सम्मान को छीने जाने के अनुभव के बारे में लिखते हैं, वास्तव में यह उनके वास्तविक सम्मान का परीक्षण करने और ईश्वर द्वारा अनंत काल तक सिद्ध किए जाने का अनुभव है। इस प्रकार, बाहरी लोगों द्वारा शर्मिंदा किए जाने के नकारात्मक अनुभव समूह के भीतर परीक्षण किए जाने और अनंत सम्मान दिए जाने के अनुभव में बदल जाते हैं। छवियों का एक सेट जिसका अल्पसंख्यक सांस्कृतिक लेखक अक्सर उपयोग करते हैं वह है एथलेटिक इमेजरी।

प्राचीन एथलीट द्वारा सहन की जाने वाली कठिनाइयों और कठिनाइयों के बीच एक स्वाभाविक संबंध है, शायद आधुनिक एथलीट भी, लेकिन निश्चित रूप से प्राचीन एथलीट ने सहन किया। प्रशिक्षण की कठोरता, प्रशिक्षण का दर्द, सुरक्षात्मक पैडिंग और हेलमेट और दस्ताने और क्या-क्या नहीं था, उस दुनिया में कुश्ती या मुक्केबाजी मैच का दर्द, वह सारा दर्द जो ऐसे व्यक्ति ने सम्मान की उम्मीद के लिए, जीत की उम्मीद के लिए सहा, उसके और अल्पसंख्यक संस्कृति के सदस्य के बीच एक समानता है जो उसके समूह के बाहर के सदस्यों द्वारा अपमानित किए जाने पर अनुभव कर सकते हैं। और इसलिए, हम चौथे मैकाबीज़ के लेखक को एथलेटिक इमेजरी का उपयोग करके पूर्ण अपमान के अनुभव को सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा में बदलते हुए पाते हैं।

यह अंश जो मैं पढ़ने जा रहा हूँ, वह एक माँ द्वारा अपने सात बेटों को दिए गए भाषण से लिया गया है, इससे पहले कि उन्हें सबसे क्रूर और आविष्कारशील तरीकों से मौत के घाट उतार दिया जाए, शायद प्राचीन साहित्य में। और वह लिखती है मेरे बेटों, तुम्हें एक सम्मानजनक प्रतियोगिता में बुलाया गया है जिसमें तुम अपने राष्ट्र की योग्यता साबित करने वाले साक्ष्य दोगे। हमारे पूर्वजों के कानून के लिए स्वेच्छा से प्रतिस्पर्धा करो।

यह वाकई शर्मनाक होगा अगर आप युवा लोग इस यातना के सामने अपना साहस खो दें, जबकि एक बूढ़े व्यक्ति ने ईश्वर के प्रति सम्मान के लिए इतनी पीड़ा सहन की। मुझे यह बताना चाहिए था कि यह तब हुआ जब एलीएजर नामक एक बूढ़े पुजारी को पहली बार मौत के घाट उतार दिया गया था। यहाँ, हम सम्माननीय या महान प्रतियोगिता की छवि पाते हैं और यह विचार कि अपमान का सामना करना वास्तव में एक प्रतियोगिता में शामिल होने के रूप में देखा जा सकता है।

और इसका परिणाम बाहरी लोगों की नज़र में पूरी तरह से पतन हो सकता है, लेकिन अंदरूनी लोगों की नज़र में और भगवान की नज़र में, जैसा कि वे अंदरूनी लोग दावा करेंगे, अंत में एक शानदार जीत होगी, जिसका सम्मान और प्रसिद्धि हमेशा के लिए बनी रहेगी। जैसा कि इस अगले अंश से पता चलता है, जिस प्रतियोगिता में वे लगे हुए थे वह वास्तव में दिव्य थी। सद्गुण, नैतिक चरित्र ने ही उस दिन पुरस्कार दिए, अपने धीरज के माध्यम से अपनी योग्यता साबित की।

जीत ने अनंत जीवन के माध्यम से अमरता ला दी। वृद्ध पुजारी एलीएजर पहले प्रतियोगी थे। सात बच्चों की माँ और उन भाइयों ने भी प्रतिस्पर्धा की।

जो तानाशाह उन्हें यातना दे रहा था, वह विरोधी था, और दुनिया और मानव जाति दर्शक थे। ईश्वर के प्रति सम्मान ने दिन जीता और अपने चैंपियन को ताज पहनाया। कौन उन एथलीटों को देखकर आश्चर्यचकित नहीं था जो ईश्वरीय कानून के नाम पर प्रतिस्पर्धा कर रहे थे? कौन आश्चर्यचकित नहीं था? जैसा कि हम नए नियम से भी पढ़ते हैं, हम पाते हैं कि एथलेटिक इमेजरी का उपयोग प्रमुख संस्कृति की अस्वीकृति और ईसाई धर्मांतरित लोगों को उनके पुराने जीवन के तरीके पर लौटने के लिए शर्मिंदा करने के प्रयासों को एक एथलेटिक प्रतियोगिता में बदलने के लिए किया जा रहा है, जहाँ जीत हार मानने में नहीं, बल्कि अंत तक डटे रहने और इस तरह एक पुष्पमाला प्राप्त करने में, या अधिक लोकप्रिय अनुवादों में, दिन के अंत में एक मुकुट प्राप्त करने में निहित है।

यह सब जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, या मुझे कहना चाहिए कि समूह के बाहर से शर्म के दंश को कम करने के बारे में बात कर रहे हैं, यह सब समूह के भीतर सम्मान और शर्म के उपयोग के साथ संतुलित है, समूह की शर्तों पर। कहने का तात्पर्य यह है कि, बेन सिराह, विजडम ऑफ सोलोमन के लेखक, फोर्थ मैकाबीज़ के लेखक, सभी चाहते हैं कि उनके यहूदी श्रोता एक-दूसरे से इस तरह से जुड़ते रहें कि वे सम्मान के तरीके के रूप में टोरा पालन के मूल्य को सुदृढ़ करें। कि दिन-प्रतिदिन एक-दूसरे के साथ अपनी बातचीत में, वे अनुमोदन करते हैं, वे तालियाँ बजाते हैं, वे प्रशंसा करते हैं, और इस प्रकार वे यहूदी जीवन शैली को जीने के लिए एक-दूसरे की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करते हैं।

इसके विपरीत, समूह के भीतर शर्म का उपयोग उन व्यक्तियों को हतोत्साहित करने के लिए किया जाना चाहिए जो टोरा-पालन जीवन शैली के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में डगमगाते हैं। इसका एक बढ़िया उदाहरण, जिसका मैं केवल उल्लेख करूँगा, पूर्वजों की प्रशंसा में भजन है, जो बेन सिराह की बुद्धि के अंत में एक प्रकार का छह-अध्याय का कोडा है, जिसमें बेन सिराह, वास्तव में, आदम से लेकर सबसे हाल के उच्च पुजारी साइमन द्वितीय, साइमन द जस्ट तक यहूदी लोगों के पूरे इतिहास से गुजरता है, यह दर्शाता है कि कैसे जो लोग भगवान की वाचा के अनुसार जीते थे, उन्होंने हमेशा के लिए सम्मान जीता, जबकि इस्राएल और यहूदा के दुष्ट राजाओं जैसे लोग जो भगवान की वाचा से विमुख हो गए, उन्होंने अपने लिए हमेशा के लिए शर्म जीती, और वास्तव में अपने राष्ट्रों के लिए, अन्य राष्ट्रों द्वारा जीते जाने के कारण शर्म जीती। प्राचीन दुनिया के वातावरण में सम्मान का एक अंतिम पहलू जिस पर मैं विस्तार से चर्चा करना चाहता हूँ, वह सार्वजनिक क्षेत्र में सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा और इसके पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा से संबंधित है।

प्राचीन भूमध्य सागर, आधुनिक भूमध्य सागर के कुछ हिस्सों की तरह, एक संघर्षशील संस्कृति, प्रतिस्पर्धा की संस्कृति के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें सम्मान को सीमित अच्छा माना जाता है। यह केवल इतना ही है जो हर जगह फैलाया जा सकता है, और मुझे और अधिक पाने के लिए, आपको कुछ खोना होगा। मुझे इसे किसी तरह आपकी कीमत पर जीतना होगा।

मैं बस लूका के सुसमाचार से एक अंश को देखकर हमें इससे परिचित कराना चाहता हूँ, शायद लूका 13 से सब्त के दिन यीशु द्वारा चंगा करने की एक बहुत ही जानी-पहचानी कहानी। अब, यीशु सब्त के दिन एक आराधनालय में शिक्षा दे रहे थे, और तभी, वहाँ एक महिला प्रकट हुई जिसमें एक आत्मा थी जिसने उसे 18 साल से अपंग बना रखा था। वह झुकी हुई थी और सीधे खड़ी होने में असमर्थ थी।

जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने उसे बुलाया और कहा, “हे स्त्री, तू अपनी बीमारी से मुक्त हो गई है।” जब उसने उस पर हाथ रखे, तो वह तुरन्त सीधी खड़ी हो गई और परमेश्वर की स्तुति करने लगी। परन्तु आराधनालय का सरदार, इस बात से क्रोधित था कि यीशु ने सब्त के दिन उसे चंगा किया था, और भीड़ से कहता रहा कि छः दिन हैं जिनमें काम किया जाना चाहिए।

उन दिनों में आओ और चंगे हो जाओ, सब्त के दिन नहीं। लेकिन प्रभु ने उसे उत्तर दिया और उससे कहा, हे कपटियों, क्या तुम में से हर एक सब्त के दिन अपने बैल या गधे को चरनी से खोलकर पानी पिलाने के लिए नहीं ले जाता? और क्या यह स्त्री, जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने 18 साल तक बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बंधन से मुक्त नहीं होनी चाहिए? जब उसने यह कहा, तो उसके सभी विरोधी शर्मिंदा हो गए, और पूरी भीड़ उन सभी अद्भुत चीजों पर आनन्दित हो रही थी जो वह कर रहा था। अब, इस बातचीत में, इस प्रकरण में, हम पाते हैं कि हम कुछ हद तक एक विशिष्ट चुनौती और पुनर्पोस्ट परिदृश्य के रूप में वर्णित कर सकते हैं, सम्मान के लिए एक विशिष्ट प्रतियोगिता, इस तथ्य को छोड़कर कि एक महिला 18 साल पुरानी बीमारी से ठीक हो गई।

लेकिन इस ज़रूरत को देखते हुए और महिला से बात करते हुए, यह कहते हुए कि तुम सब्त के दिन अपनी बीमारी से ठीक हो गई हो, यीशु सम्मान का एक निहित दावा कर रहे थे। यह इस

कहानी में सामने नहीं आता है, लेकिन हम इसे एक अन्य उपचार कहानी में पाते हैं, जो मार्क 2 में वर्णित लकवाग्रस्त व्यक्ति का उपचार है। ताकि आप जान सकें कि मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है, वह कहता है, अपना बिस्तर उठाओ और चलो। इसलिए, यीशु सब्त के दिन चंगा करने का अधिकार होने का दावा करता है, और जिस महिला को चंगा किया जाता है वह तुरंत इसे स्वीकार करती है।

वह जो कुछ भी होता है उसके लिए भगवान की प्रशंसा करती है, जो कि स्पष्ट रूप से एक कथन है कि भगवान ने इस आदमी, यीशु के माध्यम से कुछ किया है। यहाँ इस कृत्य में क्या हुआ? फिर, निश्चित रूप से, जवाबी चुनौती आती है।

आराधनालय का नेता हस्तक्षेप करता है और अप्रत्यक्ष रूप से यीशु को उसकी जगह पर रखने का प्रयास करता है। वह यीशु से बात नहीं करता; तुम्हें सब्त के दिन चंगा नहीं होना चाहिए, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से, वह भीड़ से कहता है, सब्त के दिन चंगा होने के लिए मत आना। यह ऐसा करने का दिन नहीं है।

ऐसा करने के लिए अभी छह दिन और हैं। बेशक, यह यीशु के लिए ज़्यादा निर्देशित है। आपने अभी जो किया वह ग़लत था।

तुम्हें सब्त के दिन चंगा नहीं करना चाहिए। तुम कानून तोड़ रहे हो। यीशु इस चुनौती का जवाब देते हैं।

वह तलवारबाजी की भाषा का उपयोग करते हुए एक प्रतिवाद प्रस्तुत करता है, जहाँ कोई व्यक्ति दूसरे को धक्का देता है, बचाव करता है और प्रतिवाद करता है, पीछे हटता है, और कहता है, तुम भी सब्त का उल्लंघन करोगे, सिर्फ़ एक जानवर की मदद करने के लिए। तुम सब्त के दिन अपने पशुओं की देखभाल करते हो। क्या यह किसी इंसान की देखभाल करने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी नहीं है? क्या सब्त का दिन शैतान के कामों को खत्म करने का सही दिन नहीं है, जिसने इस महिला को बाँध रखा है? अब, मुझे जो महत्वपूर्ण बात कहनी चाहिए वह यह है कि इस आदान-प्रदान पर फैसला यीशु की ओर से नहीं आता है, और यह आराधनालय के नेता की ओर से नहीं आता है।

दोनों ने एक दूसरे पर वार किया है। इसका फैसला दर्शकों को करना है। वे ही तय करते हैं कि इस मुठभेड़ में किसने सम्मान जीता है और किसने सम्मान खोया है।

लूका इस बात पर बहुत ध्यान देता है कि यह उनकी भूमिका है, क्योंकि वह अपने अंतिम वाक्य में लिखता है कि उसके विरोधियों को शर्मिंदा होना पड़ा। यीशु जो कुछ कर रहे थे, उस पर पूरी भीड़ खुशी मना रही थी। इसलिए, इस आदान-प्रदान में, यह यीशु ही था जो सम्मान के खेल में आगे निकल गया, मानो उसे चुनौती दी गई हो, लेकिन उसने जनता की नज़र में अपने अधिकार का सफलतापूर्वक बचाव किया हो।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम एक नए नियम के पाठ पर अधिक बारीकी से नज़र डालेंगे। हमारा लक्ष्य यह दिखाना होगा कि इस व्याख्यान में हमने जिन विषयों पर बात की है, वे पहली सदी के

भूमध्यसागरीय क्षेत्र के सम्मान संस्कृति और सम्मान-अपमान की गतिशीलता से संबंधित हैं, जो हमें एक विशेष नए नियम के पाठ, अर्थात् 1 पतरस की स्थिति की पादरी स्थिति और रणनीतिक प्रतिक्रिया में प्रवेश करने में मदद करते हैं।

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर उनके शिक्षण में है।

यह सत्र 1 है, परिचय: सम्मान और शर्म।